Date

पाठ-1
शब्दार्थ

	शब्द		अर्थ
1.	उन्मुक्त	-	खुला
2.	पिंजरबद्ध	-	पिंजरे में बंद
3.	कनक	-	सोना
4.	पुलकित	-	कोमल
5.	कटुक	-	कड़वी
6.	गति	-	चाल
7.	तरु	-	वृक्ष
8.	तारक	-	तारे
9.	नीड़	-	घोंसला
10.	आश्रय	-	घर
11.	विघ्न	-	रुकावट
12.	क्षितिज	-	जहाँ पृथ्वी और आसमान मिलते दिखाई देते हैं।

Scanned with CamScanner

पाठ-1
हम पंछी उन्मुक्त गगन के

कविता से

प्र० 1.) हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?

उ० 1.) हर प्रकार की सुख-सुविधा पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद इसलिए नहीं रहना चाहते क्योंकि पक्षी खुले आकाश में उड़ना चाहते है। खुले आकाश में उड़ना उनकी प्रकृति है। एक जगह बंधकर रहना उन्हे पसंद नहीं।

प्र० 2.) पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-सी इच्छाएं पूरी करना चाहते है ?

उ० 2.) पक्षी उन्मुक्त रहकर खुले आकाश में उड़ना चाहते है। नदियों का बहता जल पीना चाहते है। नीम की कड़वी निबौरी खाना उन्हे पसंद है वे पेड़ की डाल पर झुलना चाहते है।

प्र०3.) भाव स्पष्ट किजिए -

यह तो क्षितिज मिलन बन जाता है / या तनकी साँसों की डोरी।

उ०3.) ★ प्रस्तुत कविता का भाव यह है कि पक्षी जब क्षितिज की सीमा तक दौड़ने की होड़ लगाते थे तब या तो वे उस काल्पनिक स्थान पर जाकर एक दूसरे से मिल जाते है या क्षितिज को पार करने की चाहत में इतने थक जाते थे कि उनकी साँस फूलने लगती है।

Scanned with CamScanner